सोनीपत

# अहिंसा को सेवा का आधार बनाया था मूलचंद ने

अमर उजाला ब्यूरो

सोनीपत, 19 अगस्त

देश में अनेकों राजनेताओं, स्वतंत्रता सेनानियों व बुद्धिजीवियों ने गांधीवादी विचारधारा पर चलने का मन बनाया। इनमें से महात्मा गांधी के सच्चे अनुयायी बाबू मूल चंद जैन को न केवल हरियाणा अपितु समस्त राष्ट्र याद रखेगा। उन्होंने अहिंसा के बूते समाज सेवा के अनेक आयाम स्थापित किए।

20 अगस्त 1915 को ग्राम सिकंदरपुर माजरा तहसील गोहाना जिला सोनीपत में एक निर्धन परिवार में जन्मे श्री जैन ने अपने पैतृक गांव में ही न केवल प्रथम स्थान पर अपनी प्राथमिक शिक्षा उत्तीर्ण की अपितु छात्रवृति प्राप्त करके परिवार का गौरव बढ़ाया। वैसे तो बाबू जी में देशभक्ति का जज्बा बचपन से ही था, परंतु 1931 में इस जज्बे को उस समय हवा मिली जब देश के सच्चे सपूत सरदार भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव को ब्रिटिश हकूमत ने फांसी का सजा दे दी और पूरे क्षेत्र में उसका व्यापक विरोध हुआ।

श्री जैन रोहतक में उच्च शिक्षा हासिल करने के बाद चार वर्ष तक लाहौर में पढ़े। बाद में उन्होंने सनातन धर्म, कॉलेज लाहौर में दाखिला लिया। उन्हीं दिनों रोहतक के स्वर्गीय शामलाल की कोठी पर कांग्रेसी नेताओं की मिटिंग हुई, जिसमें सरहदी गांधी खान अब्दुल गफ्फार खान भी आए थे। इन नेताओं के दर्शन व विचारों को सुनकर इस नौजवान को देशभक्ति की प्रेरणा मिली। रोहतक कॉलेज में पढ़ाई के दौरान ही 1932 में श्री जैन की शादी अशिक्षित शरबती से हुई। श्री जैन ने हिम्मत करके उसे हिंदी पढ़ने का अभ्यास शुरू करवाया। परिणाम स्वरुप वे न केवल पढ़ने में ही सक्षम हुई, बल्कि हिंदी की कुछ परीक्षाएं भी पास कर गई।

पढ़ाई पूरी करने के उपरांत इस नौजवान ने गोहाना में वकालत शुरू किया। इसी के साथ वे आजादी की लड़ाई में भी भाग लेने लगे। श्री जैन 1938 से 1940 तक दिन में वकालत की और न्यायालय के समय के बाद तीनों वर्ष पैदल या साईकिल पर गोहाना के गांवों में प्रचार कर लोगों में जागृति लाने का काम किया।

1940 में गांधी जी ने व्यक्तगत सत्याग्रह का आंदोलन छेड़ दिया। श्री जैन आरंभ से ही गांधीवादी विचारों के थे। सत्याग्रह की सभी शर्तों पर वे पहले से ही अमल करते थे। इसलिए इनको सत्याग्रह में भाग लेने की अनुमति मिल गई। 6 मार्च 1941 को श्री जैन ने माजरा में ही सत्याग्रह शुरु किया। उन्होंने डी.सी. रोहतक को पहले ही नोटिस दे दिया था, इसलिए पुलिस भी काफी संख्या में आई हुई थी। अन्य साथियों के भाषण के पश्चात श्री जैन ने भाषण देना शुरु किया ही था कि पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया और रोहतक जेल में बंद कर दिया। मजिस्ट्रेट ने उन्हें डिफेंस आफ इंडिया रुल के उल्लंघन के आरोप में एक साल कैद की सजा दे दी।

आखिर 15 अगस्त 1947 को देश आजाद हुआ। 1949 में करनाल में बड़े मुस्लिम जमींदारों की जमीनों से मुजारों को बेदखलकर पाकिस्तान से आए छोटे जमींदारों को देने का कार्य शुरु किया गया। श्री जैन ने इनके विरुद्ध आंदोलन किया। अंतत: वे अपनी मुहिम में सफल हुए और पुराने मुजारों से छीनी गई कृषि भूमि के बदले पांच-पांच एकड़ भूमि उन को वापस मिल गई।

आजादी के बाद 1952 में भारता का पहला चुनाव हुआ। वे समालखा सीट से कांग्रेस के टिकट पर विधायक बने। विधान सभा में वे सदैव गरीबों व बेरोजगारों के लिए आवाज उठाते रहे। उनके स्वभाव पर विधानसभा की आश्वासन समिति का गठन हुआ और स्पीकर ने उन्हें इसका चेयरमैन बना दिया। 1956 में श्री प्रताप सिंह कैरो के मंत्रिमंडल में लोक निर्माण, आबकारी व कराधान विभाग का मंत्री बनाया गया। 1957 में वे कैथल लोकसभा से एक लाख मतों से विजई रहे।

1970 में कांग्रेस गरीबी हटाओ का नारा देकर लोकसभा का चुनाव जीत गई लेकिन देश से गरीबी नहीं हटी। इस कारण जगह-जगह आंदोलन होने लगे। अंत में संघर्ष समिति गठित की गई और श्री जैन प्रदेश संघर्ष समिति के सदस्य व करनाल समिति के संयोजक बने। 1970 में ही उन्होंने भारतीय रूसी संघ के माध्यम से 15 दिनों तक रूस की यात्रा की और मास्को विश्वविद्यालय के अकादमिक कासिल के सदस्यों से बातचीत की।

1975 में इंदिरा गांधी ने सारे देश में एमरजेंसी की घोषणा की। उस समय अन्य नेताओं व कार्यकर्ताओं के साथ उन्हें भी गिरफ्तार कर लिया गया। कुछ दिन करनाल जेल में रखने के बाद उन्हें गुड़गांवा जेल में रखा गया।

श्री जैन ने स्वतंत्रता सेनानियों का मार्ग दर्शन करते हुए कहा कि वे केवल सुविधाएं बढाने के लिए इकट्ठे न हों बल्कि समाज व देश की समस्याओं के बारे में भी सोचें। उनहोंने संदेश दिया कि सामाजिक आजादी की मंजिल अभी दूर है। इन विचारों से प्रेरित होकर हरियाणा, हिमाचल, पंजाब व चंडीगढ के स्वतंत्रता सेनानियों ने उत्तर भारत स्वतंत्रता सेनानी परिषद का गठन किया। श्री जैन को सर्वसम्मति से इसका प्रधान बनाया गया।

1989 में उपाध्यक्ष पद से त्यागपत्र देने के उपरांत श्री जैन ने अपने पैतृक गांव सिकंदरपुर माजरा में एक धर्मार्थ ट्रस्ट का गठन किया। इस ट्रस्ट के माध्यम से ही 20 अगस्त 1997 को गांव में पुस्तकालय का उद्घाटन किया। विगत 14 अगस्त 1997 को मुख्यमंत्री चौ. बंसीलाल ने इनके पैतृक गांव का दौरा किया और गांव की चौपाल में गिरफ्तारी की याद में पत्थर लगाया।

downloaded from moolchandjain.org